IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सफल सम्प्रेषण अर्थात् संचार की शिक्षण अधिगम प्रकिया में उपयोगिता

असरा बीबी सिद्दकी
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र)
करामत हुसैन मुस्लिम गर्ल्स पी0जी0 कालेज,
लखनऊ।

सम्प्रेषण अर्थात् संचार का शिक्षण अधिगम प्रकिया में बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि सफल सम्प्रेषण शिक्षक एवं छात्र दोनों के लिये अत्यन्त आवश्यक है। सफल सम्प्रेषण के माध्यम से शिक्षक विषय और पाठ्यवस्तु सम्बन्धी जानकारी को छात्र तक सम्प्रेषित कर सकने में सफल हो सकता है तथा भाषा एवं दृश्य–श्रृव्य साधनों का तथा उदाहरणों का प्रयोग कर सरलता पूर्वक छात्रों का ज्ञानवर्धन कर सकता है क्योंकि शिक्षा एक बहुआयामी प्रकिया है। शिक्षा के कई प्रकार होते है जैसे– औपचारिक शिक्षा, अनापचारिक शिक्षा, प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष शिक्षा इत्यादि। शिक्षा एक बहुआयामी प्रकिया के रूप में मनुष्य की अज्ञानता को दूर करती है तथा उसकी अन्तदृष्टि को विकसित करने का कार्य करती है। शिक्षा व्यक्तित्व के निर्माण में अत्यन्त मुख्य अभिकरण के रूप में अपनी भूमिका निभाती है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का महत्व होता है। कोई भी समाज तभी विकास कर सकता है, जब उसमें रहने वाले लोग शिक्षित हों। शिक्षा आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक सभी प्रकार के विकास में सहायक है। शिक्षा चाहें प्राथमिक स्तर की हो, माध्यमिक स्तर की या उच्च स्तर की सभी में सफल सम्प्रेषण का अत्यधिक महत्व होता है तथा शिक्षण अधिगम दोनों प्रकियाओं में उचित सम्प्रेषण अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उपयुक्त सम्प्रेषण अर्थात् सूचनाओं तथा ज्ञान का विस्तार शिक्षण अधिगम दोनों में लाभप्रद होता है। ''गांधी जी के अनुसार– शिक्षा से मेरा तात्पर्य है– बालक और मनुष्य के शरीर मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुंमुखी विकास। अर्थात शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम है।''

शिक्षा को सही मायनों में तभी सफल माना जा सकता है जब ज्ञान का सम्प्रेषण अर्थात संचार सही और पूर्ण रूप में छात्र तक हो अर्थात शिक्षा शिक्षण एवं अधिगम दोनों से सम्बन्धित है। ''सामान्य अर्थो में कहा जा सकता है कि संचार अथवा सम्प्रेषण कुछ विशेष भावनाओं और विचारों को भाषा, विभिन्न हाव–भावों तथा सुझावों को एक प्राणी से दूसरें प्राणी तक पहुंचाने की प्रकिया है। यह एक ऐसी प्रकिया है जो विभिन्न प्राणियों के बीच होने वाली अन्तर्किया का सबसे प्रभावपूर्ण माध्यम है इस प्रकिया का सम्बन्ध इन मुख्य प्रश्नों से है कि कौन व्यक्ति, किस व्यक्ति से, किन साधनों के द्वारा क्या कहता है और दूसरे पक्ष पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है। जार्ज हरबर्ड मीड ने अपनी पुस्तक ष्डपदक ैमसिंदक ैवबपमजलष में संचार की प्रकिया का उल्लेख यह स्पष्ट करने के लिए किया कि एक सामाजिक प्रकिया के रूप में व्यक्ति के मस्तिष्क तथा उसके स्वः का विकास किस तरह होता है। उन्होने मानवीय अनुभवों को व्यक्तिगत

मानसिक दशाओं के संदर्भ में स्पष्ट न करके सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत इन्हें संचार की प्रकिया के द्वारा स्पष्ट किया है। उन्होने लिखा कि भाषा तथा कुछ विशेष प्रकार के अर्थपूर्ण हाव–भावों के व्यक्तिगत बोध को ही दूर संचार कहते हैं।''

संचार या सम्प्रेषण के प्रमुख साधनों में सामाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इन्टरनेट, चलचित्र, कम्प्यूटर इत्यादि प्रमुख है। वर्तमान समय में शिक्षण कार्य में तकनीकी का प्रयोग भी बढ़ता जा रहा है जिससे अधिगम प्रकिया को अधिक सरल एवं सुगम्य बनाया जा रहा है तथा ज्ञान का संचार कर पाना अधिक सुगम होता जा रहा है। शिक्षक अपने शिक्षण में व्याख्यान के माध्यम से तथ्यों एवं ज्ञान के माध्यम से, पाठ्यकम के माध्यम से अपने अनुभवों के माध्यम से तथा उदाहरणों का प्रयोग करते हुए छात्रों की अधिगम प्रकिया अर्थात् समझनें की प्रकिया को सरल एवं सशक्त बनाने का प्रयास करता है।

सफल सम्प्रेषण के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि सम्प्रेषक को विषय वस्तु का विशिष्ट ज्ञान हो तथा उसकी भाषा भी सुस्पष्ट होनी चाहिये ताकि छात्र सुगमतापूर्वक विषय वस्तु का समझ सकें, साथ ही साथ शिक्षक को पढाते समय बीच में छात्रों से प्रश्न भी पूछते रहना चाहिये इससे यह ज्ञात कना सरल हो जाता है कि विषय वस्तु का संचार छात्रों तक सही रूप में हो रहा है या नही। सम्प्रेषण की प्रकिया में सम्प्रेषक अर्थात विचारों को प्रदान करने वाला, विचारों अर्थात सन्देश या पाठयवस्तु तथा सम्प्रेषण के साधन या माध्यम तथा सन्देश ग्रहण करने वाले अर्थात उदाहरण के लिये छात्र, सभी का महत्व होता है क्योंकि शिक्षण अधिगम की प्रकिया में इन सभी का महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रभावपूर्ण शैक्षिक सम्प्रेषण के निम्नलिखित लाभ होते हैः–

1. छात्र अपने विषय के सम्बन्ध में ज्ञान सरलता से प्राप्त कर पाते है।
2. यदि सम्प्रेषण सही ढंग से है तो कम समय में अधिक ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है।
3. छात्रों में तार्मिक क्षमता का विकास होता है।
4. छात्रों में प्रश्न पूछने एवं उत्तर देने की भी क्षमता का विकास होता है।
5. छात्रों में गहन अध्ययन के प्रति रूचि जाग्रत होती है।
6. छात्र में विषय के प्रति रूचि उत्पन्न होती है।
7. छात्रों को पाठयवस्तु का उचित स्पष्टीकरण हो जाता है।
8. सम्प्रेषण के उचित तरीकों को शिक्षक सरलता से तथा प्रभावपूर्ण ढंग से ज्ञान प्रदान करने में सफल हो पाता है।
9. यदि शिक्षण कार्य में उपयुक्त विधियों, साधनों, चित्रों, उदाहरणों, नवाचार तथा तकनीक अर्थात यांत्रिक साधनों का प्रयोग किया जाता है तो ज्ञान का प्रयोग किया जाता है तो ज्ञान एवं सूचनाओं का संचार अधिक सरल हो पाता है।

इसी कारण शिक्षा में दिनों दिन तकनीकी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है।
जैसे– प्राथमिक स्तर पर बच्चों को स्मार्ट क्लासेज के माध्यम से, चित्रों के माध्यम स, विडियो द्वारा कवितायें गिनती एवं पहाड़ें इत्यादि याद कराना, मॉडल के माध्यम से पढ़ाना इत्यादि। माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर परियोजना काय प्रोजेक्ट, चित्र, पावर प्वांइट, प्रेजेन्टेशन, चार्ट, पो0पी0टी0, ग्राफ, फ्लो चार्ट माडल कार्यशाला आदि के माध्यम रेडियो चलचित्र, इत्यादि के माध्यम में छात्रों की विषय–वस्तु के प्रति रूचि को बढाया जा सकता है इन सभी का प्रयोग करके शिक्षक अपनी सूचनाओं एवं ज्ञान का सम्प्रेषण अर्थात संचार छात्रों तथा प्रभावपूर्ण एवं सरल सुबोध रूप में कर सकते है। यांत्रिक साधनों ने शिक्षण एवं अधिगम की प्रकिया का अधिक ज्ञानवर्द्धक बनाया है। विशेष रूप से कोविड काल में यांत्रिक साधनों अर्थात कम्प्यूटर मोबाइल इत्यादि के माध्यम से शिक्षण कार्य पूण कराना संभव हो पाया था। किसी भी विषय पर सर्वे कराने में छात्रों की रूचि इत्यादि बनाने में गूगल फार्म इत्यादि की सहायता से सरलता मिलती है। इस प्रकार सफल

सम्प्रेषण अर्थात संचार का शिक्षक एवं छात्र अर्थात शिक्षण एवं अधिगत दोनों ही प्रकियाओं में महत्पूर्ण स्थान है।

संदर्भ ग्रन्थ–

1- चंहम 242– उदेदश्य भारतीय समाज में – शिक्षक–डा0 उमा टण्डन, डा0 अरूणा गुप्ता

2- चंहम 204–205 समाजशास्त्र – डा0 गोपाल कृष्ण अग्रवाल।